ISSN 2395-051X

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक बालिकाओं में संधारण का विकास

डॉ पद्मा आचार्य
प्राध्यापक - गृह विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

बालक को मानव जीवन की एक ऐसी नींव माना गया है, जिस पर मनचाही इमारत खड़ी की जा सकती है। इस इमारत की दृढ़ता एवं भव्यता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी नींव अर्थात बालक के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया गया हो। परिवार, समाज एवं राष्ट्र का विकास बालक के यथोचित विकास पर ही निर्भर होता है।

संधारण पहचानने की क्षमता का विकास है जो बालको के संज्ञानात्मक विकास का एक पक्ष है। संज्ञान तथा संधारण की क्षमता के अभाव में बालक के पर्याप्त तथा यथेष्ठ विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

बालक अनेक विशिष्टताओं का केन्द्र होता है, शारीरिक संरचना समान होने पर भी बालक-बालिकाओं में एक दूसरे से भिन्नता पाई जाती है। बालकों का व्यवहार कभी अत्यन्त सहज स्वाभाविक तो कभी अनेक विलक्षणताओं से भरपूर होता है। ऐसी विशेषताओं के कारण बालकों का विकास एवं व्यवहार प्रारंभ से ही मनोवैज्ञानिकों के चिंतन का महत्वपूर्ण विषय रहा है। संज्ञानात्मक विकास पर जीवन की व्यावसायिक सफलता निर्भर करती है।

बाल व्यवहार का अध्ययन करते समय यह जिज्ञासा प्रबल हुई कि बालक-बालिकाओं के बौद्धिक विकास, संधारण, संज्ञानात्मक विकास तथा प्रत्यय में अंतर ज्ञात करने के लिए एक प्रयोगात्मक अध्ययन के माध्यम से तथ्यों की सत्यता निरुपित की जावे। इन्हीं आधारों पर प्रस्तुत शोध कार्य को ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओं में संधारण का विकास : एक प्रयोगात्मक अध्ययन'' पर केन्द्रित किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य :

''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओं में संधारण का विकास'' शोध अध्ययन हेतु निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं -

- शहरी क्षेत्र के बालक-बालिकाओं में संज्ञानात्मक क्षमता का अवलोकन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओं में संज्ञानात्मक क्षमता का अवलोकन करना।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओं में संधारण विकास के विभेद का अध्ययन करना।
- बालक-बालिकाओं के विभिन्न आयु स्तरों में संधारण क्षमता का अध्ययन करना।
- बालक-बालिकाओं में परिमाण, संख्या, लंबाई, मात्रा तथा वजन के संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन करना।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रायोगिक विधि का अनुसरण किया गया है। इस विधि के अंतर्गत 2x2x2 फेक्टोरियल डिजाइन का प्रयोग किया गया है। इसका लाभ यह है कि एक ही प्रयोगात्मक स्थिति में तीन चरों का विभिन्न स्तरों पर प्रभाव देखा जा सकता है। यह प्रयोगात्मक डिजाइन न केवल तीन चरों का परिणाम में अलग-अलग प्रभाव का आकलन कर सकती है अपितु इसके अतिरिक्त इन चरों की आपसी-परस्पर क्रिया एवं प्रतिक्रिया का भी आकलन कर सकती है।

प्रयोज्य/निदर्श चयन :

संधारण के विकास पर वातावरण के प्रत्यक्ष प्रभाव की उत्कंठा के कारण प्रस्तुत अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि संधारण का विकास कुछ विशिष्ट आयु स्तरों पर निर्भर होता है अतः इसके स्वयं परीक्षण हेतु इस शोध अध्ययन में 4 से 8 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं का चयन प्रयोज्य के रूप में किया गया।

प्रत्येक आयु स्तर से 10-10 प्रयोज्यों को शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से पृथक-पृथक सम्मिलित किया गया। इस प्रकार शहरी क्षेत्र से 50 तथा ग्रामीण क्षेत्र से 50 प्रयोज्यों का चयन कर कुल 100 बालक-बालिकाओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

उपकरण :

बच्चों में संधारण के विकास को जानने के लिए विभिन्न उपकरणों की सहायता से कुछ प्रयोग किए गए। प्रयुक्त उपकरण साधारण थे एवं बच्चे उनसे परिचित थे। तरल पदार्थ के संधारण की समस्या से संबंधित प्रयोग में कांच के पारदर्शी 3 बीकर उपयोग में लाए गए। इनमें से 2 बीकर आयतन एवं ऊँचाई में समान थे जबकि तीसरा बीकर आयतन में पहले दो बीकरों के समान किंतु ऊंचाई में उनसे कम व चौड़ाई में उनसे ज्यादा था। इनके अतिरिक्त रंगीन पानी, पानी का एक जग तथा बीकर में रंगीन पानी डालने के लिए कुप्पी उपयोग में लाई गई।

संख्या के संधारण की समस्या से संबंधित प्रयोग के लिए सफेद बटनों का उपयोग किया गया। इसके लिए 24 बड़े आकार के नायलोन के बटन लिए गए। प्रयोग के लिए एक संकरी किन्तु लम्बी डिब्बी एवं एक छोटी तथा चौड़ी डिब्बी ली गई। लम्बाई के संधारण की समस्या के लिए 3 विभिन्न लचक वाले बिजली के तार तथा एक 2x2 फुट का हार्ड बोर्ड प्रयोग में लायाा गया। मात्रा के संधारण की समस्या के लिए समान मात्रा के गीली मिट्टी के दो गोलों से काम लिया गया। वजन के संधारण की समस्या को जानने के लिए किए गए प्रयोग में मिट्टी की समान मात्रा के दो गोलों के साथ, एक संतुलित तुला का उपयोग किया गया।

इन उपकरणों को प्रयोग में लाते समय यह ध्यान रखा गया है कि बच्चों की अपरिपक्व बुद्धि के समक्ष दुरूहता एवं असमंजसता उत्पन्न न हो सके। प्रस्तुत अध्ययन में शोध की प्रायोगिक विधि के अंतर्गत क्रमगुणित अभिकल्प का उपयोग किया गया है। इस क्रमगुणित अभिकल्प में a1,a2 क्रमशः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रयोज्य से संबंधित है। पद C का तात्पर्य प्रयोज्य के आयु स्तर से है। इस पद के अंतर्गत c1, c2, c3, c4, c5 का तात्पर्य क्रमशः 4 वर्ष, 5 वर्ष, 6 वर्ष, 7 वर्ष एवं 8 वर्ष के आयु स्तरों से है।

इस अभिकल्प के अंतर्गत तरल, संख्या, लंबाई, मात्रा तथा वजन के संधारण की समस्या को क्रमशः b1, b2, b3, b4 एवं b5 से संबोधित किया गया है। एक ही आयु स्तर के प्रयोज्यों की संख्या को से व्यक्त किया गया है।

परिणाम, व्याख्या एवं विवेचन

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक बालिकाओं में संधारण विकास हेतु सम्पादित प्रयोगों के उपरांत प्राप्त समंकों का विश्लेषण करते हुये बालकों के दोनों समूहों और उनसे संबंधित आयु स्तरों (4+, 5+, 6+, 7+, 8+) में परिमाण, संख्या, लम्बाई, मात्रा एवं वजन के संधारण के विकास का विवेचन किया गया और प्रस्तावित परिकल्पनाओं को प्राप्त परिणामों के आधार पर स्वीकृत अथवा अस्वीकृत किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रत्येक प्रयोज्य को प्रत्येक संधारण कार्य पर संधारण की उपस्थिति के लिए एक एवं संधारण की अनुपस्थिति को शून्य अंक दिए गए। इस प्रकार कुल 500 निरीक्षण (प्रयोग) किए गए। अतः संपूर्ण अध्ययन में बालकों के संभावित अंक ज्यादा से ज्यादा 500 एवं कम से कम 0 हो सकते हैं जबकि वास्तव में उन्होंने अधिकतम 164 अंक प्राप्त किए। प्राप्त अंकों (सही संधारण प्रत्युत्तरों पर) के विवेचन के लिए एनालिसिस ऑफ वेरीएन्स (एनोवा) नामक सांख्यिकी पद्धति का प्रयोग किया गया। जिसके द्वारा हमारे अध्ययनों के तीनों चरों-शहरी/ग्रामीण क्षेत्र, आयु एवं संधारण के विभिन्न कार्यों का कुल प्रसार पर प्रभाव और इन चरों के आपस में प्रतिक्रिया करने पर जो प्रभाव परिणामों पर पड़ा है, उसका अवलोकन किया जा सके। यह स्पष्ट है कि चर 'ए' (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक एवं बालिकाओं) की एफ वेल्यु 2.71 है जो कि .25 विश्वसनीयता के स्तर भी सार्थक नहीं है। यह इस बात को इंगित करता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक-बालिकायें संधारण की प्रक्रिया में सार्थक रूप से विभेद नहीं रखते हैं अर्थात् वर्तमान अध्ययन के प्राप्त परिणाम यह बताते हैं कि शहर में अथवा शहर के बाहर रहने से संधारण की योग्यता के विकास में कोई खास अन्तर नहीं पड़ता। वर्तमान अध्ययन के चर 'सी' (आयु) की एफ वेल्यू 5.72 हैयह वेल्यू .01 विश्वसनीयता के स्तर पर सार्थक है। इससे यह इंगित होता है कि आयु के विभिन्न स्तरों का संधारण प्रक्रिया के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। अर्थात् आयु एवं संधारण का वर्तमान अध्ययन के बालकों में घनिष्ट संबंध है। यह देखने को मिलता है कि 4 वर्ष की आयु में बालकों ने संधारण के किसी भी प्रकार के कार्य में कोई अंक प्राप्त नहीं किया अर्थात् 4 वर्ष 11 माह तक किसी भी बालक में संधारण की क्षमता संपूर्ण रूप से अनुपस्थित रही। 5 वर्ष की आयु के बाद धीरे-धीरे बालकों के प्राप्तांको की वृद्धि होती जाती है और 8 वर्ष की आयु पूर्ण होते-होते काफी बालकों द्वारा संधारण की क्षमता प्राप्त कर ली जाती है। वर्तमान अध्ययन में चर 'बी' की एफ वेल्यू 4.69 है जो .01 विश्वसनीयता के स्तर पर सार्थक है। प्राप्त परिणाम इस बात की ओर इंगित करते हैं कि विभिन्न प्रकार के संधारण (परिमाण, संख्या, लम्बाई, परिमाण एवं वजन) की प्रकृति के कारण वर्तमान अध्ययन के बालकों में संधारण का विकास महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित हुआ है।

अवलोकन से भी यह स्पष्ट है कि वर्तमान अध्ययन के प्रयोज्यों ने बी 2 के टास्कस (संख्या) पर सबसे ज्यादा संधारण के अंक प्राप्त किए हैं एवं बी 3, बी 4 (लम्बाई, मात्रा) पर सबसे कम अंक प्राप्त किए हैं तथा वी 1 और वी 5 (परिमाण, वजन) पर मध्यम दर्जे के अंक प्राप्त किए हैं। इन परिणामों के विश्लेषण से हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान अध्ययन के बच्चों में संख्या के संधारण में तीव्रता पायी जाती है अर्थात् संख्या का संधारण द्रुत एवं जल्दी हुआ जबकि लम्बाई का संधारण मंद एवं देर से हुआ। जो बात लम्बाई के संधारण के बारे में है वही काफी हद तक मात्रा के संधारण के बारे में कही जा सकती है। वजन एवं परिमाण के संधारण की गति मध्यम है। जहाँ तक प्रथम स्तर एवं द्वितीय स्तर की अंतःक्रियाओं (ए बी, ए सी, बी सी, ए बी, सी) का प्रश्न है, प्राप्त एफ वेल्यू सांख्यिकीय के न्यूनतम मानदंडों पर भी सार्थक नहीं है, अतः प्रस्तुत अध्ययन के तीन

चर अलग-अलग रूप से तो हो सकता है कि संधारण के विकास को प्रभावित करें (दो चर बी एवं सी वर्तमान अध्ययन में वास्तव में प्रभावित करते हैं) पर उनकी अंतःक्रिया का प्राप्त परिणामों में कोई योगदान देखने को नहीं मिलता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उम्र बालकों में संधारण के विकास को काफी हद तक प्रभावित करती है। संधारण के विभिन्न कार्यों की प्रकृति ने संधारण कार्यों को प्रभावित किया है। परन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बालक संधारण के विकास की प्रक्रिया में एक दूसरे समूह से अलग-अलग हों। चरों में अंतःक्रिया के अध्ययन से स्पष्ट है कि विभिन्न चर स्वतंत्र रूप से तो अपना योगदान परिलक्षित करते हैं परन्तु उनकी प्रतिक्रिया से परिणामों में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है।

वर्तमान अध्ययन में आयु एक महत्वपूर्ण चर साबित हुआ है जिसका कि संधारण पर सार्थक रूप से प्रभाव पड़ता है। अतः बाल-विकास के क्षेत्र में कार्य करने वाले किसी भी शोधार्थी को जो संज्ञानात्मक विकास पर कार्य कर रहा हो इस महत्वपूर्ण तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए। जैसा कि आजकल बहुत से माता-पिताओं की यह प्रवृत्ति होती जा रही है कि बहुत छोटी आयु में ही अपने बच्चों पर सीखने का वह जबर्दस्त भार डाल देते हैं जो उनकी उम्र की परिपक्वता के अनुसार यथोचित नहीं है। विकास की कुछ प्रक्रियाएं और संज्ञानात्मक विकास के कुछ पहलू एक निश्चित उम्र के पूर्व शुरू नहीं होते।

सन्दर्भ

1. कुप्पूस्वामी, श्री (1976) बाल व्यवहार और विकास।
2. गुप्ता, रामबाबू (1983) बाल-मनोविज्ञान।
3. दीक्षित, ब्रजमोहन (1979) मनोविज्ञान प्रयोग-परीक्षण।
4. भाई योगेन्द्रजीत (1981) बाल मनोविज्ञान।
5. माथुर, एस. एस. (1979) शिक्षा मनोविज्ञान।
6. लाल, जे. एन., मानव विकास का मनोविज्ञान।
7. सिन्हा, राजराजेश्वरी प्रसाद (1969) विकासात्मक मनोविज्ञान।
8. बाजपेयी, एस. आर, सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण।
9. वर्मा, प्रीति एवं डी. एन. श्रीवास्तव (1982) बाल मनोविज्ञान : बाल विकास।
10. वर्मा, रामपाल सिंह (1983) मनोविज्ञान के सम्प्रदाय।
11. श्रीवास्तव, डी. एन., आर. सिंह एवं जे. पांडे (1982) आधुनिक समाज मनोविज्ञान।
12. त्रिपाठी, लाल वचन (1983) मनोविज्ञान अनुसंधान पद्धति।
13. त्रिपाठी, लाल वचन (1983) आधुनिक प्रायोगिक मनोविज्ञान।
14. कपिल, एच. के. (1981) अनुसंधान विधियां : व्यवहार पूरक विज्ञानों में।